शब्दार्थ और टिप्पणी

अंगीरस/अंगिरा : ब्रह्मा के दस मानसपुत्रों में से एक सप्त ऋषियों में से एक ऋषि। इन्होंने स्मृतियों की रचना की थी, इसलिए इन्हें स्मृतिकार भी कहा जाता है।

अंतेवासी : गुरुकुल या आश्रम में रहने वाला छात्र

अंबरीष : सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु की अट्ठाईसवीं पीढ़ी में भगीरथ के पौत्र, मांधाता के पुत्र और परम वैष्णव भक्त

अतिमानवीय : मानवेतर, अलौकिक

अनात्मवाद : यह वाद आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। शरीरांत के साथ आत्मा का नाश हो जाता है

अनासक्त : निर्लिप्त, उदासीन

अनित्य : नश्वर, अस्थिर

अनुद्विग्न : शांत, चिंतारहित

अपवर्ग : मोक्ष

अभिनिष्क्रमण : संसार से विरक्ति, गृह त्याग

अभिभूत : चकित, भौंचक्का

अभीष्ट : चाहा हुआ, मनोरथ

अभ्यर्थना : अनुरोध, विनती

अभ्युदय : वृद्धि, उत्तरोत्तर उन्नति

अमात्य : मंत्री

अर्हत : जीवन मुक्त, मुक्त पुरुष, जिसने जीवन में ही निर्वाण प्राप्त किया है और जीवन के बाद भी निर्वाण को ही प्राप्त होगा, बौद्ध पुरोहित

अर्हता : योग्यता, परम ज्ञान, किसी पद के लिए वांछित विशेष योग्यता

अलक्तक : पैरों में लगाने का लाल रंग, महावर, आलता

अश्विनी कुमार : दो भाई जो आयुर्वेद के आचार्य एवं देवताओं के वैद्य हैं

अष्टांग मार्ग : आठ अंगों वाला मार्ग— 1.सम्यक दृष्टि 2. सम्यक संकल्प 3. सम्यक वाणी 4. सम्यक कर्म 5. सम्यक आजीविका 6.सम्यक व्यायाम 7.सम्यक स्मृति 8. सम्यक समाधि

आत्मवेत्ता : आत्मज्ञानी

आर्तनाद : दर्दभरी पुकार

इक्ष्वाकु : पुराणों के अनुसार वैवस्वत मनु का पुत्र जो सूर्यवंश (इक्ष्वाकु वंश) का प्रवर्तक था, जिसकी राजधानी अयोध्या थी।

उत्ताल : ऊँची

उपदेष्टा : उपदेशक

उपनयन संस्कार : हिंदू धर्म के अनुसार मानव जीवन के सोलह संस्कारों में से एक। इसमें यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात बालक को विद्याध्ययन के लिए भेजा जाता है।

कंटकाकीर्ण : काँटों से भरा हुआ, बाधायुक्त

कार्तिकेय : शिव के पुत्र जिनका पालन-पोषण चंद्रमा की स्त्रियों – कृत्तिकाओं ने किया था, इसी कारण यह कार्तिकेय कहलाता है। तारकारि, षणमुख और कुमार इनके अन्य नाम हैं।

काश्यप : एक प्राजापति का नाम जो रामायण और महाभारत के अनुसार ब्रह्मा के पौत्र और मारिच के मानसपुत्र थे।

कुबेर : धनाध्यक्ष तथा उत्तर दिशा के स्वामी माने जाते हैं। इन्होंने अलकापुरी बसाई थी।

© NCERT not to be republished

कौडिन्य : पंचवर्गीय भिक्षु, गौतम बुद्ध के अनुयायी
चातुर्मास : वर्षा के चार महीनों का संयुक्त नाम 'चातुर्मास' है। इन महीनों में विभिन्न नियमों (भोजन तथा कुछ आचार-व्यवहारों का निषेध) का पालन होता है
च्यवन : भृगु ऋषि और पुलोमा के पुत्र जो एक प्रसिद्ध ऋषि थे। बलवर्धक च्यवनप्राश ओषधि इन्हीं के द्वारा बनाई गई है।
जरावस्था : वृद्धावस्था
जितेंद्रिय : जिसने इंद्रियों को अपने वश में कर लिया हो, संयमी
ज्योतिष्क : देवताओं का वर्ग
तत्वज्ञान : अध्यात्म ज्ञान, तीन तत्व 1. ईश्वर (सर्वात्मा) 2. चित् (आत्मा) और 3. अचित् (जड़ प्रकृति) संबंधी ज्ञान
तात : पिता, आदरणीय व्यक्ति, एक संबोधन जो बराबर के लोगों या अपने से छोटों के लिए प्रयुक्त होता है।
तृष्णा : प्यास
त्रिवर्ग : धर्म, अर्थ, काम-इन तीनों की प्राप्ति ही मनुष्यों का संपूर्ण पुरुषार्थ है। पर बुद्ध के अनुसार त्रिवर्ग नाशवान हैं और उनसे तृप्ति नहीं होती।
दुंदुभि : डंका, नगाड़ा
ध्यानयोग : ध्यान लगाने की योग-क्रिया
ध्यानवस्थित : ध्यानमग्न
नंदन वन : स्वर्ग में स्थित देवराज इंद्र का उपवन
नंदीग्राम : अयोध्या के निकट एक गाँव जहाँ भरत ने चौदह वर्ष तक तपस्या की थी।
निरस्त : अस्वीकार
निरोध : वश में करने की क्षमता
निर्वाण : मोक्ष
निवृत्त : विरत, मुक्त
नैरंजना : गया (बिहार) के निकट बहने वाली फलगू नदी का पुराना नाम
नैष्ठिक : उपनयन से लेकर ब्रह्मयर्च का पालन करते हुए गुरुकुल में निवास करने वाला ब्रह्मचारी, निष्ठावान, किसी व्रत के अनुष्ठान में लगा हुआ।
परमार्थ : मोक्ष, उत्कृष्ट वस्तु, यथार्थ तत्व
परशुराम : राजा प्रसेनजित की पुत्री रेणुका और जमदग्नि ऋषि के पुत्र
परिनिर्वाण : पूर्ण निर्वाण, मोक्ष
परिव्राजक : भिक्षा माँगकर जीवन-निर्वाह करने वाला संन्यासी
पर्यंक मुद्रा : योग का एक आसन, बैठने की मुद्रा जिसमें धनुषधारी अपना एक घुटना मोड़ कर और दूसरी टाँग को पीछे रख कर बाण चलाता है।
पितृ ऋण : पुत्र उत्पन्न करने से होने वाली ऋण–मुक्ति
पुराकाल : पुराने समय में, प्राचीन समय में
पुरुष–सिंह : मनुष्यों में श्रेष्ठ
पुष्परिणी : छोटा जलाशय, कमलयुक्त जलाशय
प्रज्ञा : बुद्धि
प्रतीति : जानकारी, ज्ञान
प्रत्यास्मरण : पुन: स्मरण
प्रातिमोक्ष : आचरण संहिता, साधुओं के लिए नियम

© NCERT not to be republished

बलि : दैत्यों का एक राजा, भक्त प्रह्लाद का महाप्रतापी पौत्र, जिससे अश्वमेध यज्ञ के समय भगवान विष्णु ने वामन रूप में तीन पग भूमि दान में माँगी थी।
बाँबी : सर्प का बिल
बृहस्पति : सौर मंडल का पाँचवाँ और सबसे बड़ा ग्रह, एक ऋषि जो देवताओं के गुरु माने गए हैं।
ब्रह्मवेत्ता : ब्रह्म को जानने वाला
भृगु : प्रसिद्ध मुनि जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं। परशुराम इन्हीं के वंशज थे।
भिक्षु : वह संन्यासी जो भिक्षा द्वारा प्राप्त पदार्थ का सेवन करता है
मंगलाचरण : कार्यारंभ के पूर्व की जाने वाली मंगल-स्तुति
मध्य/मध्यम मार्ग: तप और भोग इन दो अंतों के बीच का मार्ग
मल्ल : एक वीर क्षत्रिय जाति जिसका कुशीनगर (उत्तर-प्रदेश) के पास राज्य था।
महावृक्ष : पीपल वृक्ष
मांधाता : सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र, जिसकी राजधानी आयोध्या थी।
मार : बौद्ध मत में कामदेव को मार कहते हैं जो पौराणिक कामदेव से भिन्न है और मोक्ष-प्राप्ति में एक प्रकार से यह शैतान की भूमिका निभाता है।
मुमुक्षु : मोक्ष की कामना करने वाला
मृगदाव : अनेक मृगोंवाला वन
राजगृह : बिहार में पटना के निकट एक प्राचीन स्थान जो बौद्धों का तीर्थस्थल है।
लिच्छवि : प्रसिद्ध राजवंश जो प्राचीन मगध के आस-पास का क्षेत्र था और जिसका विस्तार नेपाल के पूर्वी भाग तक था। उसका वर्तमान क्षेत्र मुज़फ़्फ़रपुर और वैशाली (बिहार) हैं।
वज्रबाहु : दशार्ण देश का एक राजा, जिसने अपनी पत्नी और पुत्र के रोग-ग्रस्त होने पर उन्हें वन में त्याग दिया था।
वामदेव : एक वैदिक ऋषि
वाल्मीकि : रामायण के रचनाकार, आदि कवि, मुनि
विषाक्त : विषयुक्त, विष में बुझा हुआ
वृज्जि : एक प्राचीन जाति जिसकी राजधानी वैशाली थी। वर्तमान मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार)
शाक्य मुनि : शाक्य वंश में अवतीर्ण होने के कारण गौतम बुद्ध शाक्य मुनि कहलाते थे।
शावक : पशु-पक्षी का बच्चा
शुक्र : एक बहुत ही चमकदार तारा, शुक्राचार्य, दैत्यगुरु
श्रावस्ती : श्री राम के पुत्र की राजधानी जो उत्तर कोसल के गंगातट पर बसी हुई थी। वर्तमान बलरामपुर (उत्तर-प्रदेश)
श्रेयस्कर : कल्याणकर, मंगलकारी
सम्यक आचरण : उपयुक्त आचरण
सर्वार्थ : सभी प्रकार के पदार्थ और योग के विषय
सार्थवाह : व्यापारी
सिद्‌ध योगी : अलौकिक शक्तियों से संपन्न योगी
सुमंत : राजा दशरथ के मंत्री तथा सारथी
सुमेरु पर्वत : एक कल्पित स्वर्ण पर्वत जिसे पर्वतों का राजा कहा गया है।
सूर्यकांत मणि : एक प्रकार का स्फटिक जिसे सूर्य के सामने करने से आँच निकलती है।

□□

© NCERT not to be republished